



विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachaar

विश्व हिंदी सचिवालय, मौरीशस द्वा त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 19

अंक: 69

मार्च, 2025

विश्व हिंदी दिवस 2025



विश्व हिंदी दिवस हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में लोग हिंदी को एक संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान मिली है। विश्व के कोने-कोने में हिंदी प्रेमी विश्व हिंदी दिवस को एक पर्व के रूप में मनाते हैं। वर्ष 2025 में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय, मौरीशस सहित भारत, श्रीलंका, दुबई, न्यूजीलैंड, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबेगो, जर्मनी, अमेरिका, बैंकॉक, ऑस्ट्रेलिया, चीन, म्यांमार आदि देशों में हिंदी का उत्सव मनाया गया। रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 2-7

विश्व हिंदी सचिवालय का 17वाँ कार्यारम्भ दिवस



12 फरवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से अपने आधिकारिक कार्यारम्भ की 17वीं वर्षगांठ के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इस उपलक्ष्य में 'तुलसीदास के काव्य का पठन-पाठन' विषय पर एक कार्यशाला भी लगी।

पृ. 7-8

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी'



10 फरवरी, 2025 को नागालैण्ड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी' शीर्षक से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। पहले दिन 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा और साहित्य' सत्र में यह चर्चा हुई कि हिंदी स्थानीय भाषाओं और बोलियों के बीच संवाद का माध्यम बन सकती है। दूसरे दिन 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी साहित्य और विमर्शात्मक साहित्य' सत्र में आलोचना, समीक्षा और सामाजिक परिवर्तन से संबंधित साहित्य पर व्यापक चर्चा हुई। तीसरे दिन 'पूर्वोत्तर भारत में अनुवाद साहित्य और इस क्षेत्र में हिंदी शोध की स्थिति' विषय पर सत्र चला।

पृ. 10

इस अंक में आगे पढ़ें :

- संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, उत्सव, प्रतियोगिता, हिंदी कक्षाएँ पृ. 8-12
- आभासी कार्यक्रम पृ. 12-13
- साक्षात्कार पृ. 13-14

अबू धाबी में विश्व किस्सागोई दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिता



विश्व किस्सागोई दिवस 2025 के उपलक्ष्य में भारतीय विद्या भवन, अबू धाबी, हिंदी विभाग एवं स्पंदन कलब द्वारा 20 मार्च, 2025 को 'प्रेरणा - मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता की विशेषता यह रही कि यह विद्यार्थियों के लिए नहीं, बल्कि अभिभावकों के लिए आयोजित की गई।

पृ. 11

प्रवासी भारतीय साहित्यकार डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना हुई सम्मानित



26 जनवरी, 2025 को भारत के प्रधान कौमुलावास, फ्रैंकफर्ट की ओर से जर्मनी में प्रसिद्ध प्रवासी भारतीय साहित्यकार, संपादक और मीडिया प्रोफेशनल डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना को गणतंत्र-दिवस समारोह के अवसर पर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और प्रवासी भारतीयों को एकजुट करने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

पृ. 15

श्रद्धांजलि : श्री अनुप श्रीवास्तव



20 जनवरी, 2025 को वरिष्ठ व्यंग्यकार एवं पत्रकार श्री अनुप श्रीवास्तव का देहांत हो गया। 82 वर्षीय अनुप जी लखनऊ के अट्टहास समारोह के संस्थापक व 'अट्टहास' मासिक पत्रिका के संपादक थे। विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 15

- लोकार्पण पृ. 14-15
- सम्मान एवं पुरस्कार पृ. 15
- श्रद्धांजलि पृ. 15
- संपादकीय पृ. 16



विश्व हिंदी दिवस 2025

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन



11 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मौरीशस के तत्त्वावधान में और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् एवं इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, विद्या समिति, आर्य सभा मौरीशस, हिंदी प्रचारिणी सभा, मौरीशस आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, मौरीशस सनातन धर्म टेम्पल्स फेडरेशन, हिंदी स्कूल फेडरेशन, मौरीशस हिंदी इंस्टीट्यूट एवं बृद्धावन मलिपर्पोस एडुकेशनल एसोसिएशन के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर 'हिंदी भाषा : उच्चारण' विषय पर एक कार्यशाला लागी।

कार्यशाला



11 जनवरी, 2025 को प्रातः 9 बजे से अर्ध-दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत हुई। विशेषज्ञ के रूप में जापान के दायतो बंका विश्वविद्यालय से प्रो. हिंदेआकी इशिदा को आमंत्रित किया गया था तथा मौरीशस से पूर्व हिंदी शिक्षक (प्राथमिक) एवं महात्मा गांधी संस्थान के हिंदुस्तानी गायन संगीत शिक्षक श्री मोहरलाल चमन उपस्थित थे। शुद्ध उच्चारण के प्रभावी शिक्षण द्वारा हिंदी भाषा की गहरी समझ विकसित करना इस कार्यशाला का लक्ष्य रहा।

प्रथम सत्र

प्रथम सत्र में प्रो. हिंदेआकी इशिदा ने जापानियों के उच्चारण की विशेषताओं, हिंदी के उच्चारण



में कठिनाइयों, जापान की हिंदी पाठ्य-पुस्तक और मौरीशस की हिंदी पाठ्य-पुस्तक की विशेषताओं तथा मानव हिंदी के सही उच्चारण के शिक्षण पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने उच्चारण की गलतियों के अनेक उदाहरण दिए और सही उच्चारण के कुछ वीडियो भी प्रस्तुत किए। शिक्षकों ने अपनी पाठशालाओं अथवा बैठकाओं में हिंदी उच्चारण के शिक्षण के अपने अनुभव साझा किए।

द्वितीय सत्र



द्वितीय सत्र में कविताओं एवं गीतों के माध्यम से उच्चारण सिखाने के उदाहरण प्रस्तुत किए गए। श्री मोहरलाल चमन ने पाठ्य-पुस्तक में निर्धारित कविताओं को संगीतबद्ध करके प्रस्तुत किया। इस सत्र में शिक्षकों ने बताया कि वे बच्चों को पाठ पढ़ाने के लिए गीत व संगीत का प्रयोग करते हैं।

समापन-समारोह



समापन-समारोह के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया तथा पिछले एक वर्ष में सचिवालय की उपलब्धियों व गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि माननीय डॉ. महेंद्र गंगापरसाद, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौरीशस में नवनियुक्त भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव उपस्थित थे। बीज-वक्ता जापान से आए प्रो. हिंदेआकी इशिदा थे। समारोह का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ, जिसे सुश्री तृष्णा तूरी एवं उसकी टोली द्वारा नृत्य रूप में प्रस्तुत किया गया।

माननीय डॉ. महेंद्र गंगापरसाद ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उल्लेख करते हुए कहा - "पूरी दुनिया में लोगों को हिंदी का प्रयोग करते देख दिल गदगद हो जाता है। मौरीशस में हिंदी को जीवित रखने के लिए जिन लोगों का सहयोग रहा है, उन सभी को बधाई।" उन्होंने हिंदी के संवर्धन और हिंदी-शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए अपने सहयोग का आश्वासन दिया।



महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया और कहा कि "हिंदी एक समृद्ध भाषा है, जिसकी पहुँच पूरे विश्व में है। यह देश-विदेश में फल-फूल रही है और ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, मनोरंजन और सूचनाओं का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।"

प्रो. हिंदेआकी इशिदा ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि वे कई सालों से हिंदी के छात्र रहे हैं और अब भी अपने आप को हिंदी का छात्र मानते हैं। उनकी दृष्टि में हिंदी का अध्ययन जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।

तत्पश्चात् 'हिंदी हमें विश्व से जोड़ती है' वीडियो द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के विजेताओं की प्रस्तुतियाँ दिखाई गईं।

लोकार्पण





इस वर्ष सचिवालय ने 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 16वें अंक (मुद्रित व इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप) का लोकार्पण किया। यह अंक सचिवालय की वेबसाइट - पत्रिकायन : <https://patrikayan.vishwahindi.com/> पर उपलब्ध है।



श्री भीमदेव सिबालक द्वारा लिखित 'ऑन द विंग्स ऑफ डेस्टीनी' विषयक श्री अब्दुल राजक बंधन की जीवनी का डॉ. सोमदत्त काशीनाथ द्वारा हिंदी में अनुदित - 'फिर नियति ने भरी एक स्वच्छंद उड़ान' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ



विश्व हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2024 में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया। समारोह में भौगोलिक क्षेत्र 1 : अफ्रीका व मध्य पूर्व के अंतर्गत मॉरीशस से प्रथम विजेता - श्री आकाश आर्यनाईक, द्वितीय विजेता - डॉ. सोमदत्त काशीनाथ और तृतीय विजेता - श्रीमती सुनीता आर्यनाईक को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भेट किए गए।

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा 9 से 11 आयु वर्ग के लिए आयोजित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता - 'हिंदी में अभिव्यक्ति' के विजेताओं के नाम भी घोषित किए गए। उपर्युक्त दोनों प्रतियोगिताओं के परिणाम सचिवालय की वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

इस अवसर पर भारत से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के कलाकारों द्वारा एक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। इसके माध्यम से गुजराती लोक नृत्य, कथक, भरतनाट्यम तथा ओडिसी नृत्य



प्रस्तुत किए गए। कलाकार - राहुल कुमार, आनंद गुप्ता, आशीष कुमार, विशाल, कशिका बस्सी, मोनिका रावत, खुशी बारी तथा दीक्षा अरोड़ा थे। इस नृत्य नाटिका का निर्देशन श्री अजय कुमार ने किया।



कार्यक्रम का कुशल संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र द्वारा प्रस्तुत किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

भारत में विश्व हिंदी दिवस 2024 का आयोजन नई दिल्ली



10 जनवरी, 2025 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने वैश्विक हिंदी परिवार के सौजन्य से विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार सम्मिलन' का आयोजन किया। इसमें ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, सिंगापुर, म्यांमार, होलैंड व दक्षिण कोरिया के 13 प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का अभिनंदन किया गया। अध्यक्षता ब्रिटेन की वरिष्ठ प्रवासी लेखिका दिव्या माथुर ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने कहा कि प्रवासी साहित्य

ने अपनी पहचान बना ली है। वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने कहा कि साहित्य अकादेमी का यह मंच प्रवासी भारतीय लेखकों से संवाद के लिए सबसे महत्वपूर्ण मंच है। दिव्या माथुर के अनुसार हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए अनेक देशों में इसके प्रचार-प्रसार की संभावनाओं को देखना होगा। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने प्रवासी लेखन पर संक्षिप्त उपरिणियाँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन श्री देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

साभार : साहित्य अकादेमी द्वारा प्रेस विज्ञप्ति / वैश्विक हिंदी परिवार का फेसबुक पेज



10 जनवरी, 2025 को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने कहा "हिंदी न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि भारत की विविधताओं को आपस में जोड़ती है। यह हमारी एकता, अखंडता, प्रतिष्ठा, गौरव और सम्मान का आधार है।" मंत्रालय की पहली घरेलू हिंदी पत्रिका 'स्वास्थ्य सूजन' का लोकार्पण हुआ। श्रीमती पटेल ने हिंदी की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया। पुरस्कार-वितरण-समारोह के बाद, एक भव्य कवि-सम्मेलन हुआ।

साभार : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की औपचारिक वेबसाइट

10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी परिषद नई दिल्ली, महाराष्ट्र प्रदेश और न्यू आर्ट्स कॉर्मस एंड साइन्स कॉलेज शेवगाँव के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्व हिंदी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. पुरुषोत्तम कुंदे ने की। उन्होंने कहा कि विश्व हिंदी दिवस हमें भाषायी तौर पर अधिक व्यापक बनाता है। विशेष अतिथि डॉ. क्रतु ननन पांडे ने नीदरलैंड में हिंदी के सुदीर्घ इतिहास पर प्रकाश डाला। विश्व हिंदी परिषद के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. विपिन कुमार ने विश्व हिंदी दिवस की शाभाकमानाएँ दीं। परिषद् के उपाध्यक्ष डॉ. डी. पी. मिश्र ने हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सब को प्रेरित किया।

साभार : लोकमत समाचार / जन जागरण संदेश



ગુજરાત



10 જનવરી, 2025 કો સાબરમતી વિશ્વવિદ્યાલય, અહમદાબાદ, ગુજરાત મેં વિશ્વ હિંદી દિવસ કે અવસર પર એક દિવસીય સંગોષ્ઠી કા આયોજન કિયા ગયા, જિસકા વિષય થા ‘હિંદી : એકતા ઔર સાંસ્કૃતિક ગૌરવ કી વैશ્વિક આવાજ’। કાર્યક્રમ મેં કર્ડ સત્ર આયોજિત કિએ ગએ, જિનમે હિંદી ભાષા કે આધુનિક સંદર્ભ, વैશ્વિક પ્રસાર, સાંસ્કૃતિક પહ્ચાન ઔર ભાષા-નીતિ પર ચર્ચા હુંઝી પ્રમુખ સત્રોની વિષય ‘હિંદી કા વैશ્વિક સ્વર’ તથા ‘હિંદી ઔર સંસ્કૃતિ’ રખે ગએ થેથી પ્રત્યેક વક્તાઓને વ્યાવહારિક અનુભવ ઔર શોધ-આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિકોણ સાઝા કિયા સંગોષ્ઠી મેં વિશ્વવિદ્યાલય કે વિદ્યાર્થી, સંકાય સદસ્ય ઔર આમંત્રિત વક્તા ઉપસ્થિત થેથી।

સાભાર : સાબરમતી વિશ્વવિદ્યાલય કી ઔંપચારિક વેબસાઇટ

કેરલ



ભારતીય અંતરિક્ષ વિજ્ઞાન ઔર પ્રૌદ્યોગિકી સંસ્થાન, કેરલ ને 10 જનવરી, 2025 કો ઑનલાઇન માધ્યમ સે વિશ્વ હિંદી દિવસ કા ભવ્ય આયોજન કિયા। કાર્યક્રમ કે અંતર્ગત કર્મચારીઓને કે લિએ હિંદી ટાઇપિંગ, ચિત્ર સે શબ્દ-નિર્માણ, કહાની-લેખન, દેશ-ભક્તિ ગીત-ગાયન ઔર વૈજ્ઞાનિક/તકનીકી અનુવાદ જૈસી ગતિવિધિયાં 17 ઔર 20 જનવરી કો આયોજિત કી ગઈની છાત્રોને કે લિએ પ્રતિયોગિતાએં 16, 17, 20 ઔર 21 જનવરી કો સંપન્ન હુંઝી ઇસી સંદર્ભ મેં, 26 જનવરી, 2025 કો ગણતંત્ર-દિવસ કે અવસર પર પુરસ્કાર-વિતરણ-સમારોહ આયોજિત કિયા ગયા। સંસ્થાન કે હિંદી વિભાગ ને ઇસ કાર્યક્રમ કો સફળ બનાને મેં મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા નિભાઈ।

સાભાર : ભારતીય અંતરિક્ષ વિજ્ઞાન ઔર પ્રૌદ્યોગિકી સંસ્થાન કી ઔંપચારિક વેબસાઇટ

લખનऊ



ઉત્તર પ્રદેશ હિંદી સંસ્થાન કે સૌજન્ય સે વિશ્વ હિંદી દિવસ કે અવસર પર 10 જનવરી, 2025 કો હિંદી ભવન કે નિરાલા સભાગાર, લખનऊ મેં આયોજિત એક દિવસીય સંગોષ્ઠી મેં ડૉ. મુરલી પ્રસાદ દીક્ષિત, ડૉ. શુભાકર અદીબ, ડૉ. કેશવરાજ દેવ સિંહ, ડૉ. સૂક્ષ્મકલા તથા રામ બહાદુર, સંપાદક, ઉત્તર પ્રદેશ હિંદી સંસ્થાન ને પ્રમુખ વિચાર પ્રસ્તુત કિએ। આયોજનોની સમાપન પર ડૉ. મુરલી પ્રસાદ દીક્ષિત કો વિશ્વ હિંદી સાહિત્ય અકાદમી, વિશ્વનિધિ એવં હિંદી મીડિયા કી ઓર સે સમ્માનિત કિયા ગયા। સંગોષ્ઠી મેં વક્તાઓને ને યથ સ્પષ્ટ કિયા કે હિંદી કે વैશ્વીકરણ કી રીઢ પ્રવાસી સમુદાય, અનુવાદક-લેખક-શોધકર્તા ઔર સાંસ્કૃતિક મંચ હૈને તથા શિક્ષા, વ્યાવસાયિક લેખન વ સાહિત્યિક રચનાત્મકતા મિલકર ઇસે ઔર મજબૂત કર રહી હૈની।

સાભાર : નિષ્પક્ષપ્રતિનિધિ. કાર્ય

વિશ્વ ભર મેં વિશ્વ હિંદી દિવસ 2024 કા આયોજન

ન્યૂયોર્ક



13 ફાર્વરી, 2025 કો સંયુક્ત રાષ્ટ્ર, ન્યૂયોર્ક મેં ભારત કે સ્થાર્ડ મિશન ને વિશ્વ હિંદી દિવસ સમારોહ કા આયોજન કિયા। સંયુક્ત રાષ્ટ્ર કે વैશ્વિક સંચાર વિભાગ કી મુખ્યા ઔર અવર મહાસચિવ મૈલિસા ફ્લેમિંગ ને કહા કે હિંદી વિભિન્ન સંસ્કૃતિયોનો આપસ મેં જોડિતી હૈ, નવાચાર કો સ્ફૂર્તિ દેતી હૈ ઔર રાજનય વ બહુપક્ષવાદ કે લિએ ટિકાઊ બુનિયાદ તૈયાર કરતી હૈ। ઇસી કારણ સે, હિંદી ભાષા સંયુક્ત રાષ્ટ્ર કે લિએ બહુત અહમ હૈ।



મૈલિસા ફ્લેમિંગ ને અપના સમ્બોધન હિંદી મેં - ‘નમસ્કાર દોસ્તો’ કે સાથ આગમ્ભ કરતે હુંએ કહા કે હિંદી કો સંયુક્ત રાષ્ટ્ર સમાચાર કી એક ભાષા બનાએ જાને સે, ઇસ વિશ્વ સંગઠન કી ગતિવિધિયાં હિંદી ભાષિયોને નિકટ પહુંચને લગી હૈની। ભારત કે સ્થાર્ડ મિશન વ સંયુક્ત રાષ્ટ્ર કે સાર્વજનિક સૂચના વિભાગ કે સહયોગ સે 2018 સે ચલાઈ જા રહી Hindi@UN પરિયોજના કે જરિએ, હિંદી ભાષિયોને સંયુક્ત રાષ્ટ્ર કે બારે મેં અધિક જાગરૂકતા ઉત્પન્ન હુંઝી હૈ ઔર સંયુક્ત રાષ્ટ્ર વ્યવસ્થા મેં હિંદી કે પ્રયોગ કા વિસ્તાર હુંઝી હૈ।

સંયુક્ત રાષ્ટ્ર મેં ભારત કે સ્થાર્ડ પ્રતિનિધિ રાજદૂત પી. હરીશ ને ધ્યાન આકાર્ષિત કિયા કે વિશ્વ હિંદી દિવસ ઉસ દિન કી યાદ દિલાતા હૈ, જબ સંયુક્ત રાષ્ટ્ર મહાસભા મેં 1949 મેં પહલી બાર હિંદી બોલી ગઈ થી ઔર ઇસકા ઉદ્દેશ્ય હિંદી ભાષા કે બારે મેં જાગરૂકતા બઢાના, ઇસકે ઉપયોગ કો બઢાવા દેના ઔર વैશ્વિક સ્તર પર ઇસ ભાષા કે વિદ્વાનોને વ લેખકોનો કે યોગદાન કો માન્યતા પ્રદાન કરના રહા। ઇસ વર્ષ કા વિશ્વ હિંદી દિવસ - “એકતા ઔર સાંસ્કૃતિક ગૌરવ કી વैશ્વિક આવાજ” વિષય કે તહત મનાયા જા રહા હૈ।

સાભાર : સંયુક્ત રાષ્ટ્ર, યૂનિસ સમાચાર

કોલંબો, શ્રીલંકા



10 જનવરી, 2025 કો કોલંબો, શ્રીલંકા કે પ્રતિષ્ઠિત હોટલ તાજ સમુદ્ર મેં પ્રથમ ભારત-શ્રીલંકા હિંદી સમ્મેલન મેં વિશ્વ હિંદી દિવસ મનાયા ગયા। પ્રો. સંતોષ ચૌબે, કુલપતિ, રવીન્દ્રનાથ ટૈગોર વિશ્વવિદ્યાલય, ભારત, ડૉ. જવાહર કર્ણાવિત, નિદેશક, અંતરરાષ્ટ્રીય હિંદી કેંદ્ર, ભોપાલ, શ્રી ઇંદ્રજીત શર્મા, ડૉ. શિરીન કુરૈશી, પૂર્વ હિંદી પીઠાધ્યક્ષ, એસવીસીસી, પ્રો. સૂર્ગા સિલ્વા,



पर्यटन विभागाध्यक्ष, कोलंबो विश्वविद्यालय तथा श्री बर्ड बहादुर, नेपाल ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस भव्य आयोजन में कवि-सम्मेलन भी हुआ। प्रो. अंकुरान दत्ता, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय उच्चायोग की टीम और सभी हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग से यह आयोजन अत्यंत सफल रहा।

साभार : अधिला कोलावाल का फ़ेसबुक पेज

दुबई, यू.ए.ई



10-11 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अबू धाबी विश्वविद्यालय, दुबई कैम्पस में 'साहित्य संचय शोध संवाद', 'अथक चेष्टा ट्रस्ट यूनिवर्सिट' यू.ए.ई और वागीश अंतरराष्ट्रीय संस्था यू.ए.ई. के तत्त्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रथम दिवस 'भारत एवं यूर्एड के सांस्कृतिक संबंध व संवर्धित साहित्य में मूल भाषाओं का योगदान' विषय पर वक्तव्य रखा गया। द्वितीय दिवस पर कवि-सम्मेलन, सम्मान समारोह, लोकार्पण आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। 11 जनवरी को भारतीय वाणिज्य दूतावास, दुबई में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में काव्य-मंच आयोजित हुआ।

साभार : डॉ. आरती लोकेश का फ़ेसबुक पेज

अबू धाबी, यू.ए.ई



18 जनवरी, 2025 को हिंदी विभाग, भारतीय विद्या भवन, अबू धाबी की ओर से विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सतत दूसरे वर्ष 'साहित्यिकी - अंतर विद्यालय हिंदी महोत्सव 2025' रखा

गया। इसमें कुल 6 प्रतियोगिताएँ हुईं; जिनमें 'मैं हूँ - कल्पना आधारित पात्र कथाकथन', 'हल्ला बोल - नुक्कड़ नाटक', 'कठपुतली प्रस्तुतीकरण', 'हँसो-हँसाओ', 'रील्स - रचना की अभिव्यक्ति' का समावेश रहा। संयुक्त अरब अमीरात के कुल 14 विद्यालयों ने सहभाग किया। साहित्यिकी 2024-25 समग्र विजेता का खिताब अबू धाबी इंडियन स्कूल, अल-मुरूर को प्राप्त हुआ।

साभार : भवन अबू धाबी का फ़ेसबुक पेज

साउथलैंड, न्यूजीलैंड

साउथलैंड माइग्रेंट वॉकिंग टुगोदर संगठन के अंतर्गत संचालित साउथलैंड हिंदी स्कूल ने भारतीय उच्चायोग, न्यूजीलैंड के सहयोग से जनवरी माह में विश्व हिंदी दिवस मनाया। साउथलैंड हिंदी स्कूल के छात्रों ने कविताएँ, कहानियाँ और लघु भाषण प्रस्तुत किए। शिक्षिका दिशा उपाध्याय और प्रधानाध्यापिका हिमानी मिश्रा द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। छात्र ओम चंद्र ने हिंदी की वर्तमान समय में प्रासांगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने साझा किया कि हिंदी भाषा सीखने से उनकी अन्य भाषाओं की समझ बढ़ी है और वे अन्य बच्चों को हिंदी सीखने में मार्गदर्शन करते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और दृष्टिकोण दोनों विस्तृत हुए हैं। इस आयोजन में साउथलैंड क्षेत्र के अन्य समुदायों के गणमान्य अतिथियों ने भी भाग लिया, जिन्होंने हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

आभार : हिमानी मिश्रा, प्रधानाध्यापिका, साउथलैंड हिंदी

स्कूल, अध्यक्ष,

साउथलैंड माइग्रेंट वॉकिंग टुगोदर

को शुभकामनाएँ और बधाई दीं। कार्यक्रम में कविता-पाठ भी हुआ।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

त्रिनिदाद एवं टोबेगो



10 जनवरी, 2025 को भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबेगो ने विश्व हिंदी दिवस मनाया, जिसमें भारतीय प्रवासी समाज के सदस्यों और हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम डॉ. प्रदीप राजपुरेहित, धर्मचार्य पं. रामप्रसाद परसराम, हिंदी फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम एवं उपाध्यक्ष श्री सुरुजदेव मंगरू तथा पं. गजेंद्र महाराज ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसके बाद हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट फ़ॉर कल्चरल कॉर्पोरेशन के शिक्षकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। संगीता हुसैन और अविनाश किसून ने संचालन किया।

साभार : हिंदी फ़ाउंडेशन का फ़ेसबुक पेज

हैम्बर्ग, जर्मनी



10 जनवरी, 2025 को हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के भारतीय एवं तिब्बती संस्कृति और इतिहास विभाग तथा भारत के प्रधान कौसलावास, हैम्बर्ग ने वेनिस विश्वविद्यालय के साथ मिलकर विश्व हिंदी दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी ऑफ़ हैम्बर्ग, जर्मनी एवं का फ़ोसकारी यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेनिस, इटली के छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। भारत-विद्या विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. एफ़ा विल्डन ने हैम्बर्ग में भारत-विद्या विभाग के इतिहास पर प्रकाश डाला। उद्घाटन-भाषण में वाइस कौसल श्री जॉयदीप रौय ने भारत सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों को उजागर किया। वेनिस विश्वविद्यालय की श्यामा मेढेकर, प्रो. आन्द्रेआ ड्रोको, प्रो. थोमस दानहार्ड, प्रो. जिष्णु शंकर, ओस्लो विश्वविद्यालय के प्रो. क्लोस पीटर जोलर तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय के डॉ. राकेश रंजन ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर



हिंदी कविता विधा में साहित्य अकादमी पुरस्कार 2024 की विजेता श्रीमती गगन गिल की जीवनी एवं उनके साहित्य का परिचय प्रस्तुत किया गया। श्रीमती गगन गिल ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी कविताओं का पाठ किया। हाइब्रिड मोड के इस कार्यक्रम में इटली, जर्मनी, पुर्तगाल, अमेरिका एवं भारत से अनेक विद्वान् ऑनलाइन जुड़े।

साभार : डॉ. राम प्रसाद भट्ट का फ़ेसबुक पेज

शिकागो, यूएसए



भारत के प्रधान कौसलावास, शिकागो ने हिंदी समन्वय समिति के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस मनाने के लिए 1 फरवरी, 2025 को एक कार्यक्रम की मेजबानी की। कार्यक्रम में शिकागो और मिडवेस्ट क्षेत्र के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए चल रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। भारत के प्रधान कौसल सोमनाथ घोष ने मिडवेस्ट के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी संकाय के समर्पण की प्रशंसा की और शिकागो में हिंदी का प्रचार करने वाले संगठनों को सम्मानित किया। पैनल वक्ताओं में इलिनोइस अर्बाना-शैंपैन विश्वविद्यालय में हिंदी और दक्षिण एशियाई अध्ययन के निदेशक डॉ. मिथिलेश मिश्र शामिल थे, जिन्होंने 'हिंदी शिक्षकों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता : हिंदी को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने का आधिक माध्यम' विषय पर मुख्य भाषण दिया। मिशिगन विश्वविद्यालय, एन आर्बर से डॉ. सैयद एखेयार अली ने 'यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन और विस्कॉन्सिन, यूएसए में हिंदी का प्रसार : छात्रों के साथ मेरे अनुभव की कहानी' विषय पर बात की, हिंदी समन्वय समिति के मुख्य संचालक श्री राकेश मल्होत्रा ने 'संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी का प्रचार-प्रसार : अवसर और चुनौतियों का विश्लेषण' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, शिकागो की औपचारिक वेबसाइट

केन्या



10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर केन भारती केंद्र में हिंदी भाषा की उत्कृष्टता और उसकी वैश्विक पहचान का जश्न मनाया गया। केन्या स्थित कवियों द्वारा किए गए स्वरचित काव्य-पाठ ने हिंदी के साहित्यिक सौंदर्य को अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, नैरोबी का फ़ेसबुक पेज

मैड्रिड



17 जनवरी, 2025 को भारतीय दूतावास मैड्रिड ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक शानदार सांस्कृतिक शाम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मनमोहक कथक नृत्य, मधुर हिंदी गीत, फ़िल्म निर्माता आदित्य भत्ताचार्य द्वारा 'चोरी वोरी पैसा वैसा' नाटक की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं, जो भारतीय संस्कृति की समृद्धि और हिंदी भाषा के वैश्विक महत्व को दर्शाती हैं।

साभार : भारतीय दूतावास मैड्रिड का फ़ेसबुक पेज

बैंकॉक



स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, बैंकॉक के निदेशक डॉ. चैतन्य प्रकाश योगी ने 28 जनवरी, 2025 को सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस 2025 कार्यक्रम में भाग लिया। बैंकॉक में भारतीय दूतावास की उपप्रमुख सुश्री पॉलोमी त्रिपाठी ने उद्घाटन-भाषण दिया। स्वामी विवेकानंद

सांस्कृतिक केंद्र, सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय, चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय और थाई भारत कल्चरल लॉज के हिंदी छात्रों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय और रचनात्मक सहभाग किया।

साभार : स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, बैंकॉक का फ़ेसबुक पेज

ग्वाटेमाला, अमेरिका

18 जनवरी, 2025 को ग्वाटेमाला स्थित भारतीय दूतावास ने विश्व हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर हिंदी प्रतियोगिताओं की एक श्रृंखला आयोजित की। राजदूत डॉ. मनोज कुमार मोहापात्रा ने हिंदी के प्रति सामूहिक उत्साह और समर्पण को रेखांकित किया। उन्होंने उन विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों का उल्लेख किया, जिन्हें भारतीय सरकार ने भाषा के प्रसार और विश्वभर के देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए शुरू किया है।

साभार : भारतीय दूतावास ग्वाटेमाला की औपचारिक वेबसाइट

कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया

31 जनवरी, 2025 को कैनबरा हिंदी विद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने भारतीय उच्चायोग, कैनबरा के तत्त्वावधान में विश्व हिंदी दिवस मनाया। कार्यक्रम में भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री गोपाल बागले की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने विश्वभर में फैले भारतीयों के बीच हिंदी की एकजुट करने वाली शक्ति पर प्रकाश डाला। 'हिंदी दिवस का महत्व' तथा 'बहुआयामी भारत और ऑस्ट्रेलिया के संबंधों में भारतीय प्रवासियों की भूमिका' विषयों पर कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विद्यार्थियों तथा वयस्क वर्ग के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसके अतिरिक्त 'हिंदी में मुझे बोलना क्यों पसंद है', 'हमारे दैनिक जीवन में हिंदी का महत्व', 'हिंदी दिवस मनाना : इसका मेरे लिए क्या अर्थ है' तथा 'मेरी पसंदीदा हिंदी पुस्तक या कहानी' विषयों पर भाषण प्रतियोगिता हुई और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : कैनबरा हिंदी स्कूल, ऑस्ट्रेलिया का फ़ेसबुक पेज

अमेरिका

11 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति - इंडिया



ने एक विशेष चर्चा वेबिनार का आयोजन किया, जिसका विषय 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का अर्थतंत्र' था। मुख्य अतिथि के रूप में कौसल प्रमुख श्री सोमनाथ धोष ने वेबिनार में भाग लिया। अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में, महावाणिज्य दूत ने प्रोफेसर मिथिलेश मिश्रा, निदेशक, हिंदी और दक्षिण एशियाई भाषा, इलिनोइ विश्वविद्यालय अर्बाना-शैपेन का स्वागत किया और हिंदी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में उनके प्रयासों के लिए डॉ. राकेश कुमार और आईएचए-इंडियाना टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रो. मिश्रा ने 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का अर्थतंत्र' विषय पर प्रस्तुति दी।

साभार : भारतीय दूतावास, शिकागो का फ्रेसबुक पेज

शंघाई, चीन



10 जनवरी, 2025 को भारत के प्रधान कौसलावास, शंघाई द्वारा शंघाई अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ। इस समारोह में कार्यालयीन कर्मचारियों ने और शंघाई स्थित प्रवासी भारतीय समुदाय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रवासी भारतीय श्री सुधीर मिट्टू ने महान कवि गोपालदास सक्सेना अर्थात् नीरज जी द्वारा रचित अपना पसंदीदा गीत सुनाया। डॉ. अनीता शर्मा ने संत कबीर की लेखन-शैली और विशेष रूप से उलटबांसी की विशेषताओं पर बात की। हिंदी विदुषी श्रीमती हिना चतुर्वेदी ने 'हिंदी साहित्य के राम' विषय पर प्रस्तुति की और सभी प्रतिभागियों को अपने विचारों से मंत्रमुद्ध कर दिया।

साभार : भारत के प्रधान कौसलावास, शंघाई का फ्रेसबुक पेज

यांगोन, म्यांमार



10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारत के राजदूतावास, यांगोन, म्यांमार में गरिमा के साथ संपन्न हुआ। भारत के राजदूत महामहिम श्री अभय ठाकुर ने हिंदी भाषा को विश्वबंधुत्व की भाषा बताते हुए, इसके वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. आशीष कंधवे ने हिंदी के बदलते परिदृश्य पर अपने विचार प्रकट किए। छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष स्मारिका 'हिंदी : विश्वबंधुत्व की भाषा' का विमोचन किया गया। म्यांमार में हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हिंदी विद्यालयों को पाठ्य-पुस्तकों का वितरण भी किया गया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे

विश्व हिंदी सचिवालय का 17वाँ कार्यारम्भ दिवस



12 फरवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से अपने आधिकारिक कार्यारम्भ की 17वीं वर्षगाँठ के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इस उपलक्ष्य में 'तुलसीदास के काव्य का पठन-पाठन' विषय पर एक कार्यशाला लगी, जिसमें मौरीशस के हिंदू गर्ल्स कॉलिज, गायताँ रेनाल स्टेट कॉलिज, फ्रांस ब्वाये स्टेट कॉलिज, राजकुमार गजाधर राजकीय माध्यमिक विद्यालय,

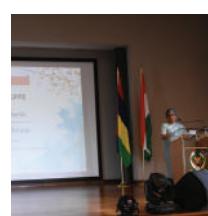
एमजीएसएस सोलफेरिनो सेकेण्डरी स्कूल, अब्दुल रमन ओस्मान स्टेट कॉलिज तथा मॉर्डन कॉलिज के विद्यार्थियों द्वारा बालकांड के दोहों एवं चौपाइयों का गायन किया गया।



कार्यशाला की विशेषज्ञ, तिरुवनंतपुरम, भारत से भारतीय हिंदी अकादमी की अध्यक्षा, प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्पा ने कहा कि आज गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस के कारण हम सब सांस्कृतिक रूप से जुड़े हैं। रामचरितमानस की ख्याति केवल भारत में ही नहीं, दूसरे देशों में भी है।



अमेरिका से 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य प्रवाह' की संस्थापिका, डॉ. मीरा सिंह ने कहा कि विद्यार्थी एक सुंदर घड़े के समान हैं, जिसको शिक्षक आकार देकर उसके व्यक्तित्व को सुंदर बनाने की कोशिश करते हैं।



रामायण सेंटर, मौरीशस की अध्यक्षा डॉ. विनोद बाला अरुण के अनुसार रामचरितमानस पर कई शोध-कार्य हुए हैं और इसका अध्ययन-अध्यापन तो होता ही है, लेकिन इसके दोहों और चौपाइयों का गायन करके हम अपने जीवन को सार्थक और सफल बनाने का प्रयास करते हैं।

समापन-समारोह



समापन-समारोह में महामहिम श्री धरमबीर गोकुल, मौरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति मुख्य



अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने सचिवालय की 17वीं वर्षगाँठ को मील का पत्थर बताया और इसकी उपलब्धियों को मान्यता देते हुए हिंदी के उन क्षेत्रों का आकलन करने की अपील की, जहाँ अधिक प्रगति की आवश्यकता है।



भारतीय उच्चायुक्त, मौरीशस, महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने तकनीक के साथ तालमेल बनाए रखने और युवा पीढ़ी के लिए हिंदी को आकर्षक बनाने के लिए आधुनिक शिक्षण-पद्धतियों के प्रयोग की आवश्यकता पर बात की। महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने सचिवालय की विकास-यात्रा का उल्लेख करते हुए सचिवालय के लक्ष्यों की प्राप्ति पर बल दिया।

प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा ने कहा कि विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना उचित स्थान पर, उचित देश ‘मौरीशस’ में हुई है। सचिवालय के प्रयासों से तथा भारत व अन्य देशों के प्रयासों से हिंदी संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपना उचित स्थान प्राप्त करके रहेगी।



कार्यक्रम के आरम्भ में डॉ. माधुरी रामधारी, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने स्वागत-भाषण में कहा कि किसी भी बड़े सपने को साकार करने के लिए छोटे-छोटे प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है। विश्व हिंदी सचिवालय ने छोटे-छोटे प्रयासों से ही आरम्भ किया था। समय के साथ महत्वपूर्ण योजनाओं को क्रियान्वित किया गया। इस अवसर पर विश्व के विभिन्न देशों से प्राप्त बधाई-गीत वीडियो रूप में प्रस्तुत किए गए।



लोकार्पण



कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित विश्व हिंदी साहित्य 2024 का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। यह अंक सचिवालय की वेबसाइट <https://patrikayan.vishwahindi.com/> पर उपलब्ध है।

इस अवसर पर डॉ. बलराम गुप्ता और डॉ. अमित कुमार गुप्ता द्वारा रचित ‘कल्पना लालजी के साहित्य में गिरमिटिया महाकाव्य’ पुस्तक तथा डॉ. मीरा सिंह कृत ‘जीवन प्रवाह’ एवं ‘लक्षिता’ पुस्तकों का विमोचन हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम



रसिका डांस अकादमी, मौरीशस द्वारा रमणीय नृत्य की प्रस्तुति हुई। नृत्य के लिए गीत का गायन अथक चेष्टा ट्रस्ट यूनिवर्सिटी, यू.ए.ई. की ओर से सुरभि अगाशे द्वारा किया गया और संगीतकार श्री आलोक कुमार शर्मा रहे। नृत्य का निर्देशन श्रीमती रविता सालिक पीतम्बर ने किया।



डॉ. शुभंकर मिश्र, उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर ने मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

**संगोष्ठी, सम्मेलन,
कार्यशाला, उत्सव,
प्रतियोगिता, हिंदी कक्षाएँ
'विश्व में हिंदी के बहुरंग' विषयक
अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी**

फरवरी 2025 को वैश्विक हिंदी महासभा एवं अखिल भारतीय हिंदी परिषद् भारत की ओर से अमर बलिदान दिवस एवं विश्व प्रेम दिवस के अवसर पर ‘विश्व में हिंदी के बहुरंग’ विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, मोरी मार्ग, महाकुंभ मेला क्षेत्र में श्रीयुत रमेश जी महाराज के पंडाल में आयोजित हुई। मुख्य अतिथि इंडोनेशिया से पधारे डॉ. धर्म यश ने कहा कि हिंदी विश्वभर में बहुत तेजी से फैल रही है और भारतीय अध्यात्म, साहित्य एवं संस्कृति को भी फैला रही है। उन्होंने इंडोनेशिया में 80 मौलिक और अनूदित पुस्तकें प्रकाशित कर निःशुल्क बँटवाया है। नई दिल्ली से आए कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर राकेश कुमार ने कहा नवरात्र में स्त्री की पूजा होती है, ठीक उसी तरह मातृभाषा हिंदी को शक्ति मानकर उसकी साधना करनी चाहिए। विशिष्ट अतिथि पूर्व अपर मुख्य सचिव एवं अग्रणी साहित्यकार डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल ने ब्रिटेन में हिंदी के विकास पर बात की। स्वीडन से पधारे डॉ. रविकांत पाठक ने कहा “स्वीडन में प्रवासी हिंदी भाषियों की संख्या काफी है। वहाँ हिंदी लोगों के रण-रण में प्रवाहित है।” वैश्विक हिंदी महासभा के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सुपरिचित साहित्यकार डॉ. विजयानन्द ने यह उद्घार किया कि विश्व की सर्वोच्च व्यापारिक भाषा बन चुकी हिंदी, राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा होकर रहेगी। संगोष्ठी के उपरांत बहुभाषी कवि-सम्मेलन आयोजित हुआ। इस अवसर पर सभी को स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र आदि भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. शंभुनाथ त्रिपाठी ‘अंशुल’ ने किया।

गंगा प्रसाद त्रिपाठी, संयुक्त महामंत्री, छत्तीसगढ़, झूसी, प्रयागराज, 211019 उत्तर प्रदेश, भारत
आधार : डॉ. विजयानन्द

मुंबई में ‘हिंदी भाषा एवं साहित्य में कौशल-विकास’ विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी





27-29 मार्च, 2025 को मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के फ़िरोजशाह मेहता सभागार में ‘हिंदी भाषा एवं साहित्य में कौशल-विकास’ विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुआ। उद्घाटन-सत्र में कुलगुरु डॉ. रवीन्द्र कुलकर्णी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में कौशल-विकास के महत्व को रेखांकित किया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. सुनील कुलकर्णी ने कौशल-विकास के लिए निदेशालय द्वारा चलायी जा रही योजनाओं पर प्रकाश डाला।

हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने कौशल-विकास का स्वरूप स्पष्ट किया। डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने बीज-वक्तव्य में पाँच सौ प्रकार के कौशलों के विकास की चर्चा की। डॉ. नरेंद्र पाठक, श्रीमती मंजू लोढ़ा, श्री वीरेन्द्र याज्ञिक, मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अनिल सिंह और निदेशालय के सहायक निदेशक डॉ. दीपक पांडेय उपस्थित थे।

इस अवसर पर निदेशालय की पत्रिका ‘भाषा’ और पुस्तिका ‘हिंदी की मानक वर्तनी’ तथा वीरेन्द्र याज्ञिक की पुस्तक ‘महाभारत का मंतव्य’ का विमोचन हुआ। सत्र का संचालन डॉ. सचिन गपाट ने किया और डॉ. दत्तात्रय मुरुमकर ने आभार व्यक्त किया।



संगोष्ठी का अगला सत्र हिंदी भाषा, मीडिया, अनुवाद और कौशल-विकास पर सम्पन्न हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता पॉडिचेरी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सी. जयशंकर बाबू ने की। वक्ताओंने कौशल-विकास के विविध संदर्भों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय से पधारी डॉ. प्रेमलता ने किया और डॉ. सचिन गपाट ने आभार प्रकट किया।

संगोष्ठी के दसरे दिन ‘हिंदी कविता और कौशल-विकास’ तथा ‘हिंदी कथा साहित्य और कौशल-विकास’ पर सत्र सम्पन्न हुआ।

संगोष्ठी के तीसरे दिन ‘हिंदी नाटक, सिनेमा, विविध कलाएँ और कौशल-विकास’ विषय

पर सत्र हुआ। डॉ. जवाहर कर्नावट ने अध्यक्षता की मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात अभिनेता अखिलेन्द्र मिश्र ने कहा कि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में अभिनय-कौशल का मानक प्रस्तुत किया है। आज का सिनेमा भी नाटक ही है। प्रमुख अतिथि वरिष्ठ पत्रकार और भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम शुक्ल ने कहा कि भारत पारंपरिक रूप से कौशल युक्त राष्ट्र हैं। प्रधान मंत्री कौशल-विकास योजना ने भारतीयों के कौशलों को विश्वस्तरीय बनाने का कार्य किया है। इस सत्र का संचालन श्रीमती मीनू मदान ने किया और डॉ. सुनील वल्वी ने आभार प्रकट किया।

तत्पश्चात् महाराष्ट्र के अपर पुलिस महानिदेशक और फ़ोर्स बन के निदेशक कृष्ण प्रकाश की अध्यक्षता में समापन-सत्र सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात अंतरिक्ष वैज्ञानिक और भारत वैभव जैसे कालजीय ग्रंथ के लेखक डॉ. ओमप्रकाश पांडेय उपस्थित थे। उन्होंने भाषा की उत्पत्ति का अत्यंत मौलिक एवं वैज्ञानिक सिद्धांत देते हुए वैदिक काल से अब तक के कौशल-विकास को रेखांकित किया। सत्र का संचालन डॉ. सुनील वल्वी ने किया और हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। संगोष्ठी का समापन प्रख्यात गायिका डॉ. सुरुचि मोहता द्वारा राष्ट्रीयी से हुआ। संगोष्ठी में प्राध्यापक, साहित्यकार, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

साभार : हिमालिनी, आज की आवाज़, सब की आवाज़ / डॉ. दीपक पांडेय का फ़ेसबुक पेज

प्रयागराज में दो दिवसीय संगोष्ठी



20-21 मार्च, 2025 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के संयुक्त तत्त्वावधान में ‘हिंदी के विकास में अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा और बुन्देलखण्डी का योगदान’ विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित हुई। उद्घाटन-सत्र में अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनीवास राव ने स्वागत-भाषण दिया। मुख्य अतिथि जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मजहर असिफ थे। अध्यक्षता उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने की। आचार्य सत्यकाम ने बताया कि अवधी भाषा हिंदी के

विकास में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रही है। इसी प्रकार हिंदी को अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता प्रदान करने में भोजपुरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ब्रजभाषा ने हिंदी को मध्यराता और लालित्य प्रदान किया है। बुन्देलखण्डी में रचित लोकगीत और लोककथाएँ हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण निधि हैं। इन सहभाषाओं द्वारा हिंदी भाषा को विविधता प्राप्त हुई है। संगोष्ठी का प्रथम सत्र ‘भोजपुरी का योगदान’ तथा द्वितीय सत्र ‘अवधी का योगदान’ विषयों पर आधारित था। द्वितीय दिवस के कार्यक्रम के अंतर्गत तृतीय सत्र ‘ब्रजभाषा का योगदान’ तथा चतुर्थ सत्र ‘बुन्देलखण्डी का योगदान’ विषयों पर रखा गया था। समापन-सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेश लाल मेहरा, अध्यक्ष, मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग, इंदौर उपस्थित थे। अध्यक्षता आचार्य सत्यकाम ने की। धन्यवाद-ज्ञापन आचार्य सत्यपाल तिवारी ने किया।

साभार : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली का फ़ेसबुक पेज / लाइब्रेरी वी.एन.एस. न्यूज़

आगरा में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

20-21 फ़रवरी, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा ‘गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा’ विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ. सुनील कुलकर्णी के अनसार प्रवासी साहित्यकारों द्वारा सूजित हिंदी साहित्य को हिंदी साहित्य के इतिहास में शामिल कर उसका सम्यक अध्ययन आवश्यक है। साथ ही, गिरमिटिया प्रवासियों और उनके वंशजों के समर्पण और साहस को भारत में यथोचित सम्मान दिलाना भी महत्वपूर्ण है। उद्घाटन-सत्र में विशिष्ट अतिथि डॉ. नरेंद्र पाठक, सदस्य, साहित्य अकादेमी थे। डॉ. माधुरी रामधारी, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस ने बीज-वक्तव्य दिया। अध्यक्षता प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने की। संगोष्ठी के अंतर्गत 5 सत्र रखे गए थे। समापन-सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने की तथा डॉ. माधुरी रामधारी की विशेष उपस्थिति रही। ‘कुली से कुलीन बनने का सफर’ - गिरमिटिया कविताएँ और उन पर आधारित पेंटिंग की प्रदर्शनी और केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथों एवं पत्रिकाओं की भव्य प्रदर्शनी हुई। संस्थान में अध्ययनरत विश्व भर से आए विद्यार्थियों द्वारा भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी हुईं।

साभार : सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान का फ़ेसबुक पेज



राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी'



10 फरवरी, 2025 को नागालैण्ड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी' शीर्षक से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन-समारोह में हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. मुन्नी चौधरी ने स्वागत-भाषण में संगोष्ठी के उद्देश्य, उत्तर पूर्व में हिंदी की स्थिति, चुनौतियों और विकास की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि भारती गोरे ने अन्तःसांस्कृतिक संवाद में हिंदी के योगदान पर ज़ोर दिया। ऑनलाइन प्रतिभागिता के माध्यम से प्रोफेसर सुनील बाबूराव कुलकर्णी, निदेशक, सेट्रल हिंदी डायरेक्टरेट ने हिंदी भाषा के विकास में शिक्षण, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। पहले दिन 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा और साहित्य' सत्र में यह चर्चा हुई कि हिंदी स्थानीय भाषाओं और बोलियों के बीच संवाद का माध्यम बन सकती है। दूसरे दिन 'पूर्वोत्तर भारत में हिंदी साहित्य और विमर्शात्मक साहित्य' सत्र में आलोचना, समीक्षा और सामाजिक परिवर्तन से संबंधित साहित्य पर व्यापक चर्चा हुई। तीसरे दिन 'पूर्वोत्तर भारत में अनुवाद साहित्य और इस क्षेत्र में हिंदी शोध की स्थिति' विषय पर सत्र चला, जिसमें अनुवाद की चुनौतियाँ और शोध की दिशाएँ प्रस्तुत की गईं। समापन-सत्र में 'भाषा घोषणा पत्र 2025' जारी किया गया, जिसमें भारतीय भाषाओं के संरक्षण, तकनीकी समावेशन और नीतिगत सहयोग पर ज़ोर दिया गया। सम्मेलन में देश-विदेश के 25 विश्वविद्यालयों और 50 संस्थानों की सहभागिता रही। साथ ही, 'हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पर विशेष कार्यशाला और 'भाषा एवं लिपि यात्रा' प्रदर्शनी का आयोजित किया गया।

साभार : नागालैण्ड विव्यू

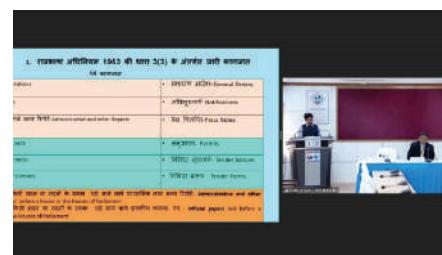
अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन 2025



नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में 10 से 12 जनवरी, 2025 तक 'अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन 2025' का आयोजन अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् और वैश्विक हिंदी परिवार के तत्त्वावधान में हुआ। कार्यक्रम में पद्मश्री श्री राम बहादुर राय, अध्यक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, श्री अनुल कोठारी, सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, श्री अनिल जोशी, संयोजक, अंतरराष्ट्रीय भाषा सम्मेलन 2025, श्री श्याम परांडे महासचिव, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, डॉ. पद्मेश गुप्त और अन्य वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। उद्घाटन-सत्र में मुख्य अतिथि ने कहा कि 'भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक आत्मा हैं और हिंदी वह सूत्र है, जो सबको जोड़ती है।' सम्मेलन में आठ सत्र आयोजित किए गए, जिनमें 'भारतीय भाषाओं की पारस्परिकता', 'डिजिटल युग में हिंदी का भविष्य', 'अनुवाद और तकनीक' तथा 'प्रवासी भारतीयों की भूमिका' जैसे विषयों पर चर्चा हुई। हिंदी विद्वानों और शोधार्थियों ने इसमें सक्रिय भागीदारी की। दूसरे दिन आयोजित सांस्कृतिक संध्या 'भाषा और संस्कृति का संगम' कार्यक्रम में मौरीशास, सूरीनाम और नेपाल आदि से आए प्रवासी कवियों ने अपनी हिंदी कविताओं का पठन किया। समापन-सत्र में 'भाषा घोषणा पत्र 2025' जारी किया गया, जिसमें भारतीय भाषाओं के संरक्षण, तकनीकी समावेशन और नीतिगत सहयोग पर ज़ोर दिया गया। सम्मेलन में देश-विदेश के 25 विश्वविद्यालयों और 50 संस्थानों की सहभागिता रही। साथ ही, 'हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पर विशेष कार्यशाला और 'भाषा एवं लिपि यात्रा' प्रदर्शनी का आयोजित किया गया।

साभार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद का फ्रेसबुक पेज

राजभाषा नियम और हिंदी ई-उपकरणों पर कार्यशाला



6 मार्च, 2025 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून में 'राजभाषा नियम और हिंदी ई-उपकरण' विषय पर कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

किया गया। मुख्य अतिथि श्री चन्दन सुशील साजन, महाप्रबंधक, ओएनजीसी एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने हिंदी-संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उद्घाटन-भाषण में उपनिदेशक श्री आशुतोष कुमार तिवारी, राजभाषा विभाग ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का पहला सत्र राजभाषा अधिनियम, 1963 पर केंद्रित था, जिसमें कार्यालयीन पत्राचार, संसद समिति निर्देश और प्रशिक्षण सामग्री पर चर्चा हुई। दूसरे सत्र में हिंदी ई-उपकरण जैसे हिंदी फँटॉन्स, अनुवाद उपकरण और स्पीच-ट्रॉटेक्स्ट सॉफ्टवेयर का परिचय दिया गया। दोपहर का सत्र कंप्यूटर प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए समर्पित था, जिसमें प्रतिभागियों ने उपकरणों के प्रयोग का अभ्यास किया।

साभार : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओपचारिक वेबसाइट

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रशासन के संदर्भ में हिंदी के संवर्धन पर कार्यशाला



7 मार्च, 2025 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भवनेश्वर द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी संचार में हिंदी के उपयोग के लिए अपनायी जाने वाली रणनीतियों पर विचार किया गया। प्रतिभागियों ने संस्थान भाषा-नीति और प्रशासनिक हिंदी पर व्यावहारिक सत्रों में विचार-विमर्श किया। संस्थान ने आशा व्यक्त की कि इस प्रकार की कार्यशाला नियमित रूप से आयोजित की जाएंगी और अन्य तकनीकी और शैक्षणिक संस्थान भी इस दिशा में प्रेरित होंगे।

साभार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भवनेश्वर की ओपचारिक वेबसाइट

मेघालय में हिंदी कार्यशाला

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, उमियम, मेघालय ने 25 मार्च, 2025 को 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में राजभाषा के कार्यान्वयन' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री राजीव कुमार नायक, उपनिदेशक, राजभाषा



कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गवाहाटी ने प्रतिभागियों को 'कंठस्थ 2.0' सहित विभिन्न राजभाषा-सहायक उपकरणों से अवगत कराया, जो अनुवाद, प्रूफरीडिंग तथा दफ्तरों के दैनिक हिंदी कार्यों में उपयोगी हैं। उन्होंने व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि वैज्ञानिक और तकनीकी रिपोर्टों को हिंदी में मानकीकृत ढंग से तैयार किया जा सकता है। कार्यशाला में उत्तर पर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के लगभग 15 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन सुश्री नामिता आर. पी. मित्रा, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ।

साभार : उत्तर पर्वी अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र की आधिकारिक वेबसाइट

'अक्षर 2025' तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने 10-12 जनवरी, 2025 को 'अक्षर 2025' नामक तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव का आयोजन किया। इसमें प्रमुख आकर्षण कवि मोहम्मद वकील का गजल-गायन और दास्तानगोई-सत्र रहा। अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में छात्रों द्वारा हिंदी गीत, नाट्य-प्रस्तुतियाँ और चित्रकला-प्रदर्शन शामिल थे। महोत्सव के अंतर्गत प्रतिभागियों और कलाकारों को प्रमाण-पत्र और सम्मान प्रदान किए गए।

साभार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की आधिकारिक वेबसाइट

'जश्न-ए-अदब' साहित्य उत्सव 2025

दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) में 22 से 24 फरवरी, 2025 तक



आयोजित 'जश्न-ए-अदब' साहित्य उत्सव ने हिंदी साहित्य, संगीत और कला के प्रेमियों को एकत्र किया। जश्न-ए-अदब फाउंडेशन द्वारा आयोजित यह तीन दिवसीय उत्सव हिंदी और उर्दू साहित्य के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था। उद्घाटन-सत्र में पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', कुमार विश्वास, कुमुद रंजन और अशोक चक्रधर जैसे प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम के दौरान 'कविता की भूमिका', 'हिंदी साहित्य का भविष्य' और 'साहित्य में समकालीन विषय' जैसे विषयों पर चर्चा हुई। समापन-सत्र में युवा प्रतिभाओं और वरिष्ठ साहित्यकारों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

साभार : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की आधिकारिक वेबसाइट

प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में श्रीमती बीना सुनील और श्रीमती गीता चंद्रन की उपस्थिति रही।

साभार : भवन अबू धाबी का फ़ेसबुक पेज

सूरीनाम में हिंदी की परीक्षाएँ



26 जनवरी, 2025 को सूरीनाम पैडागोजिकल इंस्टीट्यूट (SPI), जिसे Kweekschool के नाम से भी जाना जाता है, में हिंदी परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें 183 छात्रों ने भाग लिया। ये छात्र प्रथमा से लेकर प्रेवेशिका (भाग 1 से 4) तक के चार स्तरों में विभाजित थे। यह वार्षिक परीक्षा हर साल जनवरी के अंतिम रविवार को आयोजित की जाती है और यह सुरिनामी हिंदी समुदाय के लिए मील का पत्थर है।

इस परीक्षा का आयोजन हिंदी परीक्षा समिति द्वारा किया गया था, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती लैला लालाराम ने की और जिनके साथ समिति के सदस्य जोति महादेवमिसीर, अनुस्का जांगबहादुरसिंह, कमला रामचरण और करण जगेसर ने पूरी मेहनत से काम किया।

छात्रों की आयु में काफी भिन्नता थी, सबसे उम्रदाराज उम्मीदवार 83 वर्ष के थे, जबकि सबसे छोटे छात्र की उम्र 9 वर्ष थी। इसके अतिरिक्त, कुछ विद्यार्थियों ने नीदरलैंड से भी परीक्षा दी। उच्च स्तरों की परीक्षा, जैसे परिचय और कोविद (भाग 5 और 6) फ़रवरी में आयोजित की गई।

186 परीक्षार्थियों ने आवेदन किया था, जिसमें से 166 ने परीक्षा दी और 150 अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए।

9 मार्च, 2025 को सूरीनाम हिंदी परिषद् में प्रमाण-पत्र वितरण समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का आरम्भ सत्रंगी डांस स्कूल द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुति से हुआ। श्री शाम जानकी ने गायन से समा बाँधी।

समारोह की अध्यक्षता महादेव आयुक्त ज्योति ने की। परीक्षा समिति की अध्यक्ष श्रीमती लैला लालाराम ने सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की और इन परीक्षाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने उन सभी शिक्षकों का भी

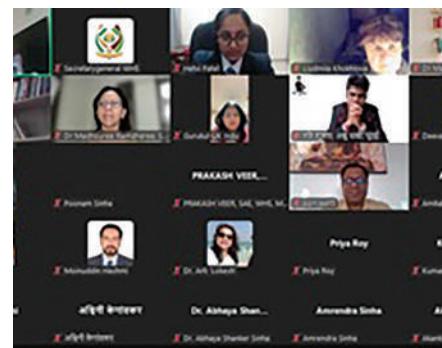


आभार व्यक्त किया, जो हिंदी को सँवारने में अपना समय समर्पित कर रहे हैं। छात्रों की ओर से आयुक्त जिया महादेव ने समिति का धन्यवाद किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें हिंदी भाषा के प्रति आदर भाव बनाए रखना चाहिए। श्री सोमवीर आर्य, निदेशक, एसवीसीसी ने सूरीनाम में हिंदी के संरक्षण और विकास के प्रयासों की प्रशंसा की।

श्री देव शर्मा, डीएनए के उपाध्यक्ष ने गर्व व्यक्त करते हुए आशा जताई कि प्रतिभागियों की संख्या फिर से कोविड-पूर्व स्तर तक पहुँचेगी, जब 700 से अधिक विद्यार्थी शामिल हुआ करते थे। श्री हैरोल्ड प्रामसुख, परिषद् के अध्यक्ष ने भाषण में अपना उत्साह साझा किया – ‘हिंदी को सहेज कर हम न केवल अपने समुदाय को मज़बूत बनाते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को एक मूल्यवान धरोहर भी सौंपते हैं।’

अंत में, श्रीमती लैला लालाराम ने एक महत्वपूर्ण सुझाव दिया कि प्रत्येक प्रतिभागी, जिसने परीक्षा उत्तीर्ण की है और कक्षाएँ ली हैं, उसे अगली बार अपने साथ एक मित्र को भी लाना चाहिए।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज



गुरुकुल यू.के., इंलैंड की छात्रा दीवा करनानी शाह ने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ‘खिलौने वाला’ का वाचन किया। भारतीय विद्या भवन, अबू धाबी से हेत्वी पटेल ने बताया कि साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि यह एक ऐसा दर्पण है, जिसमें समाज, आत्मा और विचार के प्रतिबिंब साफ़ दिखायी देते हैं। केनभारती सेंटर, नैरोबी से अवनि गुप्ता ने केन्या की साहित्यकार डॉ. साधना सक्सेना की कविता ‘काश’ का वाचन किया तथा उनके कहानी-संग्रह ‘मकड़ाल’ से ली गई कहानी ‘तिली’ को संक्षेप में सुनाया। इंलैंड से इन्दु बरोट ने बताया कि वे स्कूल के बच्चों को हिंदी भाषा सिखाने के साथ-साथ उन्हें साहित्य से भी जोड़कर रखती हैं। यूर्झा से श्री रवि शुक्ला ने बताया कि कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाते समय भाषा-शिक्षण को आसान बनाया जा सकता है। सबसे पहले विद्यार्थियों में परीक्षा के डर को समाप्त करना होगा और उनमें परीक्षा के अंकों के भय को दूर करना होगा। केन्या से अभिजीत गुप्ता ने स्व. डॉ. साधना सक्सेना के जीवन-परिचय पर प्रकाश डाला तथा उनके साहित्य से अवगत कराया। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. विजयानन्द ने बताया कि सभी लेखक संवेदना से जुड़कर बाल-साहित्य तथा प्रौढ़ साहित्य लिखते हैं। बच्चों में हिंदी के प्रति अभिरुचि को पैदा करने के लिए बचपन से ही उनकी मानसिकता को विकसित करना चाहिए। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन, विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड की अध्यक्षा डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने किया।



साभार : [HTTPS://UTKARSH.COM/HI/CURRENT-AFFAIRS/SRI-LANKA-LAUNCH-1ST-CERTIFICATE-COURSE-IN-HINDI-ON-WORLD-HINDI-DAY](https://UTKARSH.COM/HI/CURRENT-AFFAIRS/SRI-LANKA-LAUNCH-1ST-CERTIFICATE-COURSE-IN-HINDI-ON-WORLD-HINDI-DAY)

आभासी कार्यक्रम

(i) हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

4 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 21’ विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया।

1 फ़रवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 22’

विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। केन्द्रीय विद्यालय, मास्को, रूस की छात्रा अनाहिता हूरिया ने प्रेमचंद की कहानी ‘बड़े भाई साहब’ की सुंदर व्याख्या की और इस कहानी के मूल संदेश को न केवल व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया, बल्कि प्रेमचंद की कहानी-कला को भी उजागर किया। न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, अमेरिका की छात्रा जसमीन कौर ने बताया कि प्रवासी जीवन की कहानियाँ हमें नई संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती हैं। केलानिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका की छात्रा रुविनी श्रीमालिका ने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना ‘राम की शक्ति पूजा’ का उल्लेख करते हुए कहा कि यह कविता अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। रूस से अजय कुमार साहू के अनुसार साहित्य के प्रति बच्चों की रुचि बढ़ाने के लिए उन्हें भौतिकवाद से दर रखना ज़रूरी है। अमेरिका से गैब्रिएला निक ने कहा कि हिंदी-लेखन तथा हिंदी की पढ़ाई में अभिरुचि बढ़ाने के लिए वे ब्रेन मैपिंग करती हैं। श्रीलंका से हसारा दसुनि हिरिमुतुगौड ने हिंदी के पाठ्यक्रम पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. वसुधा गाडगिल ने बताया कि साहित्य हमें जीवन जीने की कला सिखाता है, साहित्य समाज को मानवीय मूल्यों से जोड़ता है। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया, उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा श्री प्रकाश वीर ने कार्यक्रम का संचालन किया।



7 मार्च, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 23’ आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। इंडियन स्कूल दार एस सलाम, तंजानिया की छात्रा, प्रियांशी भट्ट ने मुंशी प्रेमचंद की जीवनी तथा उनकी कहानी ‘नमक का दारोगा’ पर विस्तार से प्रकाश डाला। सर अब्दुल रमन ओस्मान स्टेट कॉलिज, मॉरीशस की छात्रा, आरती बकोरी ने बताया कि तुलसीदास ने रामचरितमानस के द्वारा भगवान राम की महिमा तथा उनकी भक्ति को घर-घर तक पहुँचाया। राजस्थान विश्वविद्यालय, भारत की छात्रा प्रीति गुप्ता ने भीष्म साहनी द्वारा रचित नाटक ‘हानश’ पर अपनी प्रस्तुति दी। तंजानिया से अध्यापिका जसबीर कौर रूपराए ने कहा कि वे एनसीईआरटी की पाठ्य-पुस्तक ‘मल्हार’ से ‘मैया मोरी मैं नहीं माखन खोयो’ तथा



‘वसंत’ से ‘हम पंछी उन्मुक्त गगन के’ कविताओं का सस्वर वाचन करवाकर बच्चों में साहित्य के प्रति अभिरुचि जगाती हैं। मौरीशस से शिक्षिका प्रीति जौनकी ने विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में साहित्य के प्रति पैदा होने वाली रुचि पर ध्यान आकृष्ट कराया। भारत से अध्यापिका डॉ. दीपिका विजयवर्गीय ने बताया कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच भावनात्मक संबंध विद्यार्थियों की प्रतिभा को सँवारने का एक सशक्त माध्यम है। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि तुलसी, सुर और कबीर के बिना हिंदी की कल्पना नहीं की जा सकती। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया, धन्यवाद-ज्ञापन उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने तथा संचालन वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

(ii) हिंदी में अभिव्यक्ति

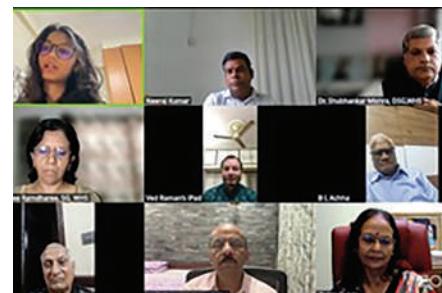


18 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी में अभिव्यक्ति- भाग 21’ आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। अलफ्रेड ई. जम्पेला स्कूल, जर्सी सिटी, अमेरिका की छात्रा अनुजा नेरे ने भारत के बिहार राज्य की मधुबनी चित्रकला का तथा परिवार के साथ भारत की यात्रा का उल्लेख किया। ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, उज्ज्वेकिस्तान से मरुजु भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की विद्यार्थी ने अपने विद्यालय तथा विद्यार्थी ने अनुभवों को साझा किया। कालिंदी महाविद्यालय, भारत से निक्की ने हिंदी पर अपने विचार साझा किए और अपनी स्वरचित कविता ‘हिंदी क्या है’ का वाचन किया। अमेरिका से नीना सरीन ने बताया कि गणित की अध्यापिका होने के बावजूद उन्होंने स्कूल के बाद बच्चों को हिंदी पढ़ाने के लिए ‘आफ्टर स्कूल’ नाम से एक क्लब बनाया है। उज्ज्वेकिस्तान से डॉ. सिरेजिदीन नुर्मातोव ने बताया कि वे 46 वर्षों से हिंदी का अध्ययन तथा अध्यापन कर रहे हैं और उज्ज्वेकिस्तान में हिंदी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भारत से डॉ. आरती पाठक ने भाषा-

शिक्षण के तीन स्तरों की बात की - मातृभाषा शिक्षण, द्वितीय भाषा शिक्षण और विदेशी भाषा शिक्षण। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. विनोद ‘प्रसून’ ने वक्ताओं की प्रस्तुतियों की सराहना की और अपनी टिप्पणी दी। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया, धन्यवाद-ज्ञापन उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने तथा संचालन वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने किया।



15 फरवरी, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 22’ आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। इंडियन स्कूल ऑफ लुसाका, जाम्बिया की छात्रा आध्या सिंह ने ‘वीर अभिमन्यु’ नामक कविता प्रस्तुत की। लोरेटो कॉन्वेंट, मौरीशस की छात्रा लक्षणसिंग बंधुआ ने भाषा और संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला। घेंट विश्वविद्यालय, बेल्जियम के छात्र रो दबवेय ने बताया कि भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास और भारतीय साहित्य का ज्ञान हिंदी से ही संभव है। जाम्बिया से हिंदी अध्यापिका ज़िली दास ने अपने विद्यालय में आयोजित हिंदी के कार्यक्रमों की चर्चा की। मौरीशस की हिंदी शिक्षिका तेविशा गूकूलक लछमानेन ने हिंदी में संचार-कौशल पर अपने विचार व्यक्त किए। बेल्जियम के व्याख्याता श्री लियो वान क्लेनेनब्रूगेल ने बताया कि वे शिक्षण में नवाचार अपनाकर विद्यार्थियों को हिंदी भाषा से जोड़ रहे हैं। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. सविता चड्ढा ने मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति को निखारने के उपाय बताए। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने कार्यक्रम के आरम्भ में सबका स्वागत किया और वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने धन्यवाद-ज्ञापन एवं मंच-संचालन किया।



22 मार्च, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 23’ आभासी

कार्यक्रम का आयोजन किया। सिंगापुर से तईशा कासी ने शिक्षा में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की भूमिका पर प्रकाश डाला। सीरिया से हनान सारा ने बताया कि वे डुओलिंगो के प्रयोग से हिंदी सीख रही हैं। फ्रैंडशिप कॉलिज (गल्फ), मौरीशस की छात्रा, प्रीयांग चारबी ने हिंदी के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया। सिंगापुर से विना गुप्ता ने कहा कि यदि बाल्यावस्था से ही उच्चारण पर ध्यान दिया जाएगा, तो त्रुटिपूर्ण उच्चारण से बचा जा सकेगा। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की प्राध्यापिका, डॉ. रेणु चौधरी ने केंद्रीय हिंदी संस्थान की शिक्षण-योजना और हिंदी में छात्रों की अभिव्यक्ति में सुधार की चर्चा की। मौरीशस के शिक्षक श्री विक्रम परतोब ने बताया कि वे पाठ्य-पुस्तक, गायन, नाटक, एनिमेटेड फिल्मों तथा कहानियों के माध्यम से बच्चों को हिंदी पढ़ाते हैं। अध्यक्षीय संबोधन में, डॉ. वेद रमण पाण्डेय ने कहा कि “हर भाषा का अपना एक घर होता है और उस घर के अपने नियम होते हैं।” अर्थात् जितनी भाषाएँ होती हैं, उतने घर होते हैं। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया तथा उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने आभार प्रकट किया। पुस्तकालय अधिकारी, श्री नीरज कुमार ने संचालन किया।

(‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि’ तथा ‘हिंदी में अभिव्यक्ति’ आभासी कार्यक्रमों के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : [HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT](https://www.youtube.com/@WORLDHINDISECRETARIAT) पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

13 जनवरी, 2025 को मौरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रसारित ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम में ‘ध्य-छाँव हिंदी नाट्य समूह’, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकार, श्री शाहिद अलि अतिथि रहे। उन्होंने कहा कि हिंदी और उर्दू हमारी साझी बोलियाँ हैं। बॉलीवुड फिल्मों में हमै देखते हैं कि हिंदी और उर्दू का सम्मिश्रण होता है। उनके अनुसार, हिंदी और उर्दू बस नाम अलग-अलग हैं, पर दोनों के सांस्कृतिक मूल्य बराबर हैं। ‘चौंच नवाब’ और ‘आधे-आधे’ नाटक में अपने अभिनय के बारे में उन्होंने बताया कि अभिनय एवं मंचन की दिनिया में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, बस निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है। साक्षात्कारकर्ता श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने श्री शाहिद अलि को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

10 फरवरी, 2025 को ‘हिंदी भाषा : उच्चारण’ विषय पर ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम चला, जिसमें दायतो बंका विश्वविद्यालय, जापान के प्रोफेसर हिदेआकि इशिदा का साक्षात्कार लिया गया। उन्होंने बताया कि बौद्ध धर्म तथा भगवान बुद्ध के प्रति आस्था तथा भारत और उसकी



संस्कृति को जानने की उत्सुकता ने उनके मन में हिंदी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न किया। जापानी भाषा एवं हिंदी भाषा के उच्चारण में काफ़ी अंतर है। जापानी छात्रों को महाप्राण वर्णों - 'ख', 'घ', 'ठ', 'ढ' आदि के उच्चारण में कठिनाइयाँ होती हैं। जापान के लोग अधिकांशतः हिंदी के बारे में नहीं जानते हैं, पर भारत के बारे में जानना-सुनना बहुत पसंद करते हैं। भारत के भिन्न प्रांतों में हिंदी उच्चारण की दृष्टि से काफ़ी अंतर है। अतः विदेशी छात्रों के उच्चारण में भी अंतर दिखना स्वाभाविक है। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने क्षितिज कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रो. हिंदेआकि इशिदा को धन्यवाद किया।

10 मार्च, 2025 को 'तुलसीदास के काव्य का पठन-पाठन' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय हिंदी अकादमी, तिरुवनंतपुरम की अध्यक्षा, प्रो. एस. तंकमणि अम्मा से बातचीत की गई। उनका जन्म केरल में हुआ, परन्तु घर में हिंदी का वातावरण होने के कारण उन्होंने हिंदी आसानी से सीख ली। केरल की भाषा मलयालम संस्कृतिनिष्ठ भाषा है और हिंदी के 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत के ही हैं, इसलिए मलयाली भाषी लोग आसानी से हिंदी सीख लेते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम मेधा के माध्यम से हिंदी आगे बढ़ रही है और यह साहित्य की भाषा तक सीमित न होकर ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। उनके अनुसार, 'वसुधैरु कुटुंबकम्' के आदर्श वाक्य की दृष्टि से यदि हम अपने को मोड़ दें, तो हिंदी का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल होगा। श्री धनराज शम्भु ने इस साक्षात्कार के लिए प्रो. एस. तंकमणि अम्मा के प्रति आभार व्यक्त किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी संचिवालय की औपचारिक वेबसाइट [HTTPS://VISHWAHINDI.COM/NEW/#](https://VISHWAHINDI.COM/NEW/#) के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी संचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

'कम्प्यूटर एक परिचय' के 40वें संस्करण का लोकार्पण



4 जनवरी, 2025 को कुशाभाऊ ठाकेरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेशन सेंटर, भोपाल में आईसेक्ट

पब्लिकेशन द्वारा श्री संतोष चौबे, वरिष्ठ विज्ञान लेखक की सूचना तकनीक पर हिंदी में प्रकाशित देश की पहली पुस्तक 'कम्प्यूटर एक परिचय' के 40वें संस्करण का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में म.प्र. निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग, भोपाल के अध्यक्ष श्री भरत शरण सिंह उपस्थित रहे।

श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि नई टेक्नोलॉजी का परिचय हिंदी में करवाना एक बड़ी बात है। श्री संतोष चौबे ने कहा कि इस किताब को लिखने के बाद स्कूलों में कार्यशालाओं के जरिए किताब की जानकारियाँ देने का सिलसिला आरम्भ हुआ।

'कम्प्यूटर एक परिचय' ने देश भर में विक्रय के कीर्तिमान स्थापित किए। वर्ष 1986 में, जब यह पहली बार प्रकाशित हुई, तब से लेकर अब तक इसकी 10 लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। हिंदी राज्यों में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसने छात्रों तथा आम जनता के बीच बराबर की लोकप्रियता हासिल की और इसे पढ़कर हजारों लोगों ने कम्प्यूटर की दुनिया में प्रवेश किया। प्रस्तुत संस्करण इसका 40वाँ संशोधित एवं संवर्धित संस्करण है। इस संस्करण में कम्प्यूटर के मूल तत्त्वों जैसे हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर तथा कार्यप्रणाली को समझाया गया है। साथ में, आधुनिक अवधारणा जैसे कम्प्यूटर नेटवर्क, इंटरनेट, सायबर सिक्युरिटी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भी बात की गई है। इस तरह यह सरल हिंदी में लिखी गई कम्प्यूटर विषय की आधुनिक किताब बन जाती है। यह पुस्तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के 'मेघनाथ साहा पुरस्कार' से सम्मानित 'नेशनल बेस्ट सेलर' है।

साभार : इंटीग्रेटेड ट्रेड / अमाज़ोन.इन / VISHWARANG -TAGORE LIT FEST TILAF'S POST / हरिभूमि

'विदेशी हिंदी सेवी' पर केंद्रित कैलेंडर का विमोचन

8 जनवरी, 2025 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के 28वें स्थापना दिवस समारोह में 'विदेशी हिंदी सेवी' पर केंद्रित विश्वविद्यालय के वर्ष 2025 के कैलेंडर का विमोचन किया गया। कस्तूरबा सभागार में आयोजित स्थापना दिवस की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने की। विमोचन के दौरान कुलपति सहित मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. हरमहेंद्र सिंह बेदी, विशिष्ट अतिथि ऑक्सफॉर्ड विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाचार्य डॉ. इमरे

बंधा, श्री गोविंद सिंह, प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रो. कृपाशंकर चौबे, प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर, डॉ. रामानुज अस्थाना, प्रो. आनंद पाटिल, श्री राजेश कुमार यादव, डॉ. अमित विश्वास, श्री राजेश आगरकर, श्री सुरेश यादव, श्री कुलदीप पांडेय तथा श्री विजय खोब्रागडे मंचासीन थे।

इस कैलेंडर में जॉर्ज अब्राहम प्रियर्सन (इंग्लैंड), लोठार लुत्से (जर्मनी), गार्सा द तासी (फ्रांस), अलेक्सेइ पेत्रोविच बारान्निकोव (रूस), क्यूया दोई (जापान), जॉन बोर्थविक गिलक्राइस्ट (इंग्लैंड), इंद्रा दसनायक (श्रीलंका), अभिमन्यु अनत (मॉरीशस), रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर (न्यूजीलैंड), फ़ादर कामिल बुल्के (बेलिजियम), चीन तीड़हान (चीन) और यूरोपीनी चेलिशेव (रूस) को शामिल किया गया है।

कैलेंडर की परिकल्पना विश्वविद्यालय के सहायक संपादक डॉ. अमित कुमार विश्वास द्वारा की गई है तथा राजेश आगरकर ने डिजाइन तैयार किया है। डॉ. विश्वास ने कहा कि कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, कुलसचिव प्रो. आनंद पाटिल व प्रकाशन प्रभारी श्री राजेश यादव का मार्गदर्शन व प्रोत्साहन मिला। विदेशी हिंदी सेवी पर आधारित कैलेंडर के निर्माण में सहयोग प्रदान करने के लिए उन्होंने जे.एन.यू., नई दिल्ली के रशियन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हेमचंद पाण्डेय, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान के डॉ. वेद प्रकाश, रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फॉर द ह्यूमैनिटीज, मॉस्को की इंदिरा गाज़िएवा, सबरगमुव विश्वविद्यालय, श्रीलंका के डॉ. ब्रेसिल नागॉड वितान, प्रताप महाविद्यालय, अमलनगर के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. कुबर कुमारवत और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के चीनी भाषा के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिबाण घोष, फ्रेंच भाषा के डॉ. संदीप कुमार और डॉ. श्रीनिकेत मिश्र, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. अमित राय, डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. संदीप सपकाळे, श्री बी.एस. मिरगे एवं डॉ. आलोक कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया।

साभार : हिंदी आर.अएस.यू.एच का फ़ेसबुक पेज

'जुगनू यादों के' पुस्तक का लोकार्पण

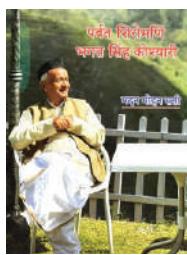
10 फ़रवरी, 2025 को अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले की समाप्ति के अगले ही दिन लतिका बत्रा की संस्मरणात्मक पुस्तक 'जुगनू यादों के' का लोकार्पण और परिचर्चा हिंदी भवन में रखी गई कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री दिविक रमेश ने की। श्री सुभाष नीरव, वंदना



बाजेयी, अनीता कपूर और वन्दना यादव ने पुस्तक पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सफल संचालन कानपुर से आई आर.जे.रंजना यादव ने किया। बचपन के नटखट किसों, संयुक्त परिवार में एकसाथ बड़े होते भाई-बहनों के लड़ने-झगड़ने, रुठने-मनाने से आगे निकलकर इस पुस्तक में वह सब है, जिसे हमारी पीढ़ी ने देश के अलग-अलग हिस्सों में रहते हुए भी सम्भाव से जीया था।

साभार : वंदना यादव का फ्रेसबुक पेज

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हिंदी पुस्तकें विमोचन



9 मार्च, 2025 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में जनपद संपदा विभाग द्वारा 'ज्ञानपथ' श्रृंखला के अंतर्गत श्री मदन मोहन सती की पुस्तक 'पर्वत शिरोमणि भगत सिंह कोश्यारी' का विमोचन और परिचर्चा-कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पुस्तक की विशेषताओं, लेखक के दृष्टिकोण और हिंदी साहित्य में इसके योगदान पर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि माननीय श्री ओम बिरला, अध्यक्ष लोक सभा रहे। अध्यक्षता माननीय डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने की। यह अवसर हिंदी में ज्ञान-प्रसार और साहित्यिक संवाद को बढ़ावा देने का माध्यम बना।

साभार : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का फ्रेसबुक पेज

'हिंदी के बाल-साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव' पुस्तक का लोकार्पण

28 फरवरी, 2025 को रांची महिला कॉलिज के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी की शिक्षिका डॉ. कुमारी



उर्वशी की नई पुस्तक 'हिंदी के बाल-साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव' का औपचारिक लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक जनवरी 2025 में प्रकाशित हुई है। समारोह में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुप्रिया और विभागाध्यक्ष डॉ. विनीता सिंह ने पुस्तक का अनावरण किया। प्राचार्या डॉ. सुप्रिया ने कहा कि इस पुस्तक द्वारा बाल-साहित्य पर वैश्वीकरण के प्रभावों को गहराई से समझने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम में भाषण, पुस्तक की विषयवस्तु पर टिप्पणी एवं भविष्य की अपेक्षाओं पर चर्चा रखी गई।

साभार : लाइब्रेरी हिंदुस्तान

साभार : पत्रिका.कॉम



26 जनवरी, 2025 को भारत के प्रधान कौंसुलावास, फ्रैंकफर्ट की ओर से जर्मनी में प्रसिद्ध प्रवासी भारतीय साहित्यकार, संपादक और मीडिया प्रोफेशनल डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना को गणतंत्र-दिवस समारोह के अवसर पर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और प्रवासी भारतीयों को एकजुट करने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वे वर्तमान में जर्मनी में हिंदी साहित्य, संस्कृति और मीडिया के क्षेत्र में सक्रिय हैं। समारोह में भारतीय कौंसुल जनरल



20 जनवरी, 2025 को वरिष्ठ व्यायकार एवं पत्रकार श्री अनूप श्रीवास्तव का देहांत हो गया। 82 वर्षीय अनूप जी लखनऊ के अद्वृहास समारोह के संस्थापक व 'अद्वृहास' मासिक पत्रिका के संपादक थे। उनका जन्म 1 अगस्त, 1944 को सीतापुर में हुआ था। अस्सी और नब्बे के दशक में अपने ज्ञानान्वयन के चर्चित अखबार 'स्वतंत्र भारत' में उन्होंने अपनी सेवाएँ दी थीं। वे सन् 2000 में 'स्वतंत्र भारत' में संपादक बने।

साभार : अमर उजला

श्रद्धांजलि श्री अनूप श्रीवास्तव

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पृण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक	: डॉ. शुभकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक	: श्री प्रकाश दीर्घा
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजौरी-बिहारी
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ्रेनिक्स 73423, मॉरीशस World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फोन	: (230) 660 0800
ई-मेल	: info@vishwahindi.com
वेबसाइट	: www.vishwahindi.com
डेटाबेस	: www.vishwahindidb.com
फ्रेसबुक	: www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर	: @WHSMauritius
इंस्टाग्राम	: WHS_08



संपादकीय

हिंदी : विश्व संवाद की भाषा



विश्व हिंदी सचिवालय का मूल उद्देश्य सदैव यह रहा है कि हिंदी को केवल भारतीय जनमानस की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व समुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए। समय के साथ यह संकल्प एक व्यापक और शक्तिशाली आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। आज हिंदी की गँूँज भारत की सीमाओं से बहुत दूर, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फ़िजी, गयाना, दक्षिण अफ़्रीका, नेपाल, अमेरिका और यूरोप के देशों तक सुनाई देती है। यह केवल भाषा के विस्तार की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संवेदना के वैश्विक प्रसार का जीवंत दस्तावेज़ है।

विश्व हिंदी सचिवालय इन पहलों के माध्यम से लगातार सक्रिय है, जो हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पटल पर नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। विभिन्न देशों में आयोजित आभासी हिंदी कार्यशालाएँ, वेबिनार, संगोष्ठियाँ, हिंदी दिवस तथा विश्व हिंदी दिवस आदि के आयोजन न केवल भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच संवाद का सेतु भी निर्मित कर रहे हैं। सचिवालय का यह दृष्टिकोण, “हिंदी सभी भारतीय भाषाओं के बीच सेतु है”, विश्वभर के हिंदीप्रेमियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य कर रहा है।

हाल के महीनों में हिंदी शिक्षण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में कई सार्थक पहलें की गई हैं। मॉरीशस के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन को सुदृढ़ करने के लिए अनेक योजनाएँ आरंभ की

गई हैं। साथ ही, नई पीढ़ी में भाषा के प्रति अनुराग जागृत करने हेतु ‘संचारिका’ जैसे सांस्कृतिक और भाषाई कार्यक्रमों का मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (एम.बी.सी.) रेडियो पर प्रसारण भी व्यापक रूप से सराहा गया है। इन प्रयासों ने हिंदी को जीवन, अनुभव और संस्कृति से जोड़ते हुए एक प्रभावी माध्यम के रूप में विकसित करने में मदद मिली है।

आज की दुनिया में भाषा की वास्तविक शक्ति उसके डिजिटल विस्तार में निहित है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सचिवालय ने डिजिटल मंचों पर हिंदी की उपस्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सोशल मीडिया, वेबसाइटों और ऑनलाइन मॉड्यूल्स के माध्यम से हिंदी को और अधिक सुगम और सुलभ बनाया जा रहा है। डिजिटल हिंदी का विस्तार भविष्य में हिंदी को तकनीक-सुलभ, आधुनिक और विश्वव्यापी बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम सिद्ध होगा।

विश्व भर के हिंदी संस्थानों के मध्य सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से विश्व हिंदी सम्मेलन जैसी परंपरा ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय विमर्श की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई है। इस प्रकार के सम्मेलन न केवल भाषाविदों, शोधकर्ताओं और साहित्यकारों के संगम हैं, बल्कि हिंदी के भविष्य की दिशा को निर्धारित करने का एक महत्वपूर्ण मंच भी है। ध्यान रहे कि शिक्षण, अनुवाद, तकनीक, भाषिक नवाचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से जुड़े विषयों पर वैश्विक स्तर पर सार्थक चिंतन निःसंदेह हिंदी को और समर्थ बनाता है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि भाषा के साथ साहित्य,

संस्कृति और मूल्यों की समृद्ध विरासत सुरक्षित रहे। महात्मा गांधी, प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा और हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे कालजयी साहित्यकार हिंदी की आत्मा हैं। नई चुनौतियों के बीच इस परंपरा को जीवंत बनाए रखना सचिवालय का दायित्व है। यही कारण है कि हिंदी दिवस, कवि-सम्मेलन, निबंध प्रतियोगिता तथा युवा साहित्यिक मंच जैसी गतिविधियाँ हमारे नियमित क्रियाकलापों का अभिन्न हिस्सा रही हैं।

आज हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक संवेदनात्मक सेतु है, जो भारत और विश्व को आत्मीयता के सूत्र में पिरोए हुए है। वैश्विक परिदृश्य में जब दुनिया बहुभाषिकता की ओर बढ़ रही है, हिंदी अपने सहज, सरल और मधुर स्वभाव के कारण लोगों के हृदय से जुड़ रही है।

विश्व हिंदी सचिवालय अपने इस पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है, ताकि आने वाले समय में हिंदी वैश्विक संचार, संस्कृति, शोध और शिक्षा की एक सशक्त, प्रभावी और सम्मानित भाषा के रूप में स्थापित हो सके।

पर ध्यान रहे, हिंदी का उज्ज्वल भविष्य तभी सुनिश्चित होगा, जब हम सभी अपने स्तर पर यह संकल्प लें -

‘जहाँ भी रहें, हिंदी में सोचें, हिंदी में बोलें और हिंदी में लिखें।’

डॉ शुभंकर मिश्र
उपमहासचिव